Nanaji Deshmukh

Nanaji Deshmukh also known as Chandikadas Amritrao Deshmukh was born on 11 October 1916 in Kadoli, a small town in the Hingoli district of Maharashtra to Amritrao Deshmukh and Rajabai Amritrao Deshmukh. At an early age, he lost his parents and was brought up by his maternal uncle. His early life was full of strife and struggle, however, he grew up to become a dedicated social activist and also worked in the fields of education, health, and rural self-reliance. He was honoured with the Padma Vibhushan.

Nanaji Deshmukh became inspired by Lokamanya Tilak and his nationalist ideology. He was also in close association with eminent leaders such as Dr. Keshav Baliram Hedgewar and Deen Dayal Upadhyaya who he met for the first time in the year 1940. In 1947, on the launch of two journals, Rashtradharma and Panchjanya, and a newspaper called Swadesh, Shri Atal Bihari Vajpayee was assigned the responsibility of the editor and Deen Dayal Upadhyaya was made the Margdharshak with Nanaji as the managing director.

Nanaji Deshmukh was given the charge of Bharatiya Jan Sangh in Uttar Pradesh as General Secretary. Deshmukh's groundwork was a great help in strengthening Bhartiya Jan Sangha (BJS) at the grass roots. By 1957 BJS had established its units at each and every district in Uttar Pradesh and credit for this goes to Nanaji who had extensively travelled all over the state and put in a lot of hard work.

Nanaji Deshmukh also actively participated in Bhoodan Movement started by Vinoba Bhave. He spent two months with Vinoba, and was greatly inspired by the success and appeal of the movement. Later, when Jayaprakash Narayan gave the call for "Total Revolution", Nanaji responded by giving total support to this movement. Nanaji Deshmukh was elected in 1977 from Balrampur Lok Sabha constituency of Uttar Pradesh. He was offered a Cabinet portfolio which he declined.

In 1980, when he turned 60, he opted out of politics, devoting himself completely to social and constructive work, living in ashrams and keeping a low profile. He did pioneering work towards anti-poverty and minimum needs programmes. Other areas of his work were agriculture and cottage industry, rural health and rural education. Nanaji assumed chairmanship of the Deendayal Research Institute (DRI) which he had founded in 1972 to validate the philosophy of Integral Humanism propounded by Pandit Deendayal Upadhyaya. Integral Humanism gave a vision for Bharat that with an approach to man and his relationship to society that is integral and complementary could transform India turning it into a self-reliant and compassionate example for the world to follow.

Nanaji propounded a model for the development of rural areas on the basis of Integral Humanism. After initial experiments in Gonda (U.P.) and Beed (Maharashtra), Nanaji fine-tuned a program that would cover health, hygiene, education, agriculture, income generation, conservation of resources, and social conscience, that is both sustainable and replicable. The vision of the project was 'Total transformation through total development with people's initiative and participation'. He was also instrumental in carrying out social restructuring programme in over 500 villages of both Uttar Pradesh and Madhya Pradesh.

He finally settled down at Chitrakoot, a holy place on the borders of Uttar Pradesh and Madhya Pradesh. It was in 1969 that Deshmukh had visited Chitrakoot for the first time and was moved to see the condition of the society. He resolved to change the face of Chitrakoot during his lifetime. He established Chitrakoot Gramoday Vishwavidyalaya, India's first rural University, and served as its Chancellor.

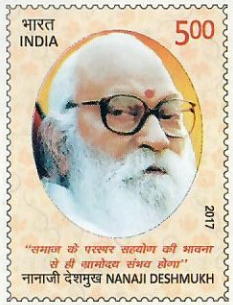
He was nominated to Rajya Sabha in the year 1999 in recognition of his services to the nation. He was also awarded Padma Vibhushan in 1999. India's former President A.P.J. Abdul Kalam praised Deshmukh for his "single-minded devotion to the uplift of the people". He died the age of 94, on 27 February 2010 in the premises of Chitrakoot Gramoday Vishwavidyalaya.

Department of Posts is pleased to release a Commemorative Postage Stamp on Nanaji Deshmukh.

Credits:-

Text	:	Based on the material available on internet
Stamp / FDC/Brochure	:	Smt. Nenu Gupta
Cancellation Cachet		

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA



नानाजी देशमुख
NANAJI DESHMUKH

विवरणिका BROCHURE

नानाजी देशमुख

नानाजी देशमुख, जो चंडिकादास अमृतराव देशमुख के नाम से भी जाने जाते हैं, का जन्म 11 अक्तूबर, 1916 को महाराष्ट्र के हिंगोली जिले के एक छोटे कस्बे कडोली में अमृतराव देशमुख तथा राजाबाई अमृतराव देशमुख के घर हुआ था। बाल्यावस्था में ही उनके माता-पिता का देहांत हो गया और उनका पालन-पोषण उनके मामा द्वारा किया गया। उनका आरंभिक जीवन कठिनाइयों और संघर्षों से भरा हुआ था, बावजूद इसके वे एक समर्पित सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में बड़े हुए और उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण आत्म स्वाबलंबन के क्षेत्र में भी कार्य किया। उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।

नानाजी देशमुख, लोकमान्य तिलक की राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रेरित हुए। वे डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार तथा दीनदयाल उपाध्याय जैसे प्रमुख नेताओं के निकट संपर्क में भी रहे, जिनसे उनकी प्रथम भेंट वर्ष 1940 में हुई। 1947 में, दो पत्रिकाओं, राष्ट्रधर्म और पांचजन्य तथा एक समाचार पत्र, स्वदेश को आरंभ करने के अवसर पर श्री अटल बिहारी वाजपेयी को संपादक की जिम्मेदारी दी गई तथा दीनदयाल उपाध्याय को मार्गदर्शक तथा नानाजी को प्रबंध निदेशक का उत्तरदायित्व सौंपा गया।

नानाजी देशमुख को उत्तर प्रदेश में भारतीय जनसंघ के महासचिव का प्रभार सौंपा गया। देशमुख द्वारा जमीनी स्तर पर किए गए कार्यों से भारतीय जनसंघ (बीजेएस) को मजबूती मिली। 1957 तक, उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जिले में भारतीय जनसंघ की ईकाई स्थापित हो गई थी, जिसका श्रेय नानाजी को जाता है, जिन्होंने व्यापक रूप से समूचे प्रदेश का दौरा किया और वहां कड़े परिश्रम से अनेक जमीनी कार्य संपन्न किए।

विनोबा भावे द्वारा शुरू किए गए भू-दान आंदोलन में नानाजी ने सक्रिय रूप से भाग लिया। दो महीने तक वे विनोबा जी के साथ रहे। वे आंदोलन की सफलता और उसके प्रभाव से अत्यधिक प्रभावित हुए। बाद में, जब जयप्रकाश नारायण ने ''संपूर्ण क्रांति'' के लिए आह्वान किया तो नानाजी ने इस आंदोलन को पूर्ण समर्थन दिया। 1977 में नानाजी देशमुख उत्तर प्रदेश के बलरामपुर लोक सभा क्षेत्र से सांसद चुने गए। उन्हें मंत्रिमंडल में शामिल होने का न्यौता दिया गया, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया।

1980 में 60 वर्ष की आयु में उन्होंने राजनीति से संन्यास ले लिया। आश्रम में रहकर तथा सादगी से जीवन व्यतीत करते हुए, उन्होंने अपना जीवन सामाजिक तथा रचनात्मक कार्यों में लगा दिया। उन्होंने गरीबी उन्मूलन तथा न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रमों के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। कृषि और कुटीर उद्योग, ग्रामीण स्वास्थ्य और ग्रामीण शिक्षा जैसे अन्य क्षेत्रों में भी उन्होंने कार्य किया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद के दर्शन को मूर्त रूप देने के लिए देशमुख द्वारा 1972 में दीनदयाल शोध संस्थान (डीआरआई) की स्थापना की गई और वे इसके अध्यक्ष बने। नानाजी ने एकात्म मानववाद के अंतर्गत समाज के समग्र विकास के लिए एकात्म कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की, जो भारत के विकास को गति दे सके तथा इसे स्वावलंबी और दुनिया के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण बना सके।

नानाजी ने इस आधार पर ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए एक माडल तैयार किया। गोंडा (उत्तर प्रदेश) तथा बीड़ (महाराष्ट्र) में शुरूआती प्रयोग के उपरांत, नानाजी ने अंततः एक कार्यक्रम तैयार किया, जो स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि आय सृजन, संसाधनों का संरक्षण तथा सामाजिक जागरूकता को कवर करता था तथा जो टिकाऊ और अनुकरणीय दोनों था। इस परियोजना का उद्देश्य लोगों की पहल तथा भागीदारी से समग्र विकास के माध्यम से ''पूर्ण परिवर्तन'' था। उन्होंने उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश, दोनों के 500 से अधिक गांवों में सामाजिक पुनर्निर्माण कार्यक्रम कार्यान्वित किया।

अंत में, वे चित्रकूट में स्थायी रूप से रहने लगे। चित्रकूट, उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित एक पवित्र स्थान है। यह 1969 का समय था, जब देशमुख पहली बार चित्रकूट आए थे। यहां के समाज की दुर्दशा देखकर वे द्रवित हो गए। उन्होंने अपने जीवनकाल में चित्रकूट की दशा को बदलने का संकल्प लिया। उन्होंने भारत के प्रथम ग्रामीण विश्वविद्यालय, 'चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय' की स्थापना की और इसके कुलपति के रूप में कार्य किया।

राष्ट्र के प्रति उनकी सेवाओं को देखते हुए, उन्हें वर्ष 1999 में राज्य सभा के लिए मनोनीत किया गया। उन्हें 1999 में पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया गया। भारत के पूर्व राष्ट्रपति, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने ''लोगों के उत्थान के प्रति पूर्ण निष्ठा'' के लिए, देशमुख की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। 94 वर्ष की आयु में, चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के प्रांगण में 27 फरवरी, 2010 को उनका निधन हो गया।

डाक विभाग, नानाजी देशमुख पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ	:	इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/विरूपण	:	श्रीमती नीनू गुप्ता

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	5.0 लाख
Stamps Printed	:	0.5 million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00